

इन तत्वों को अन्य उर्वरकों द्वारा भी दिया जा सकता है जो बाजार में उपलब्ध हो।

**खाद देने का समय व ढंग:**

सिंचित क्षेत्रों में फास्फोरस व पोटाश की सारी मात्रा और नाइट्रोजन की आधी मात्रा बिजाई के समय पोरा विधि से खेत में डालनी चाहिए। नाइट्रोजन की शेष आधी मात्रा पौधों की चंदरी जड़ें निकलने की अवस्था में डालनी चाहिए। नाइट्रोजन की प्राप्ति के लिए यूरिया का प्रयोग करना चाहिए। जिसे सिंचाई या वर्षा के बाद खेत में डालना चाहिए। असिंचित या बारानी क्षेत्रों में नाइट्रोजन की आधी तथा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा को बिजाई के समय पोरा विधि जस्त की कभी प्रायः रेतीली भूमियों में होती है। अतः जिक सल्फेट 25 कि.ग्रा./हेक्टेयर की दर से बिजाई के 15 दिन पहले उन भूमियों में डालें जहां जस्त को कमी हो।

**उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी की जाँच करा कर सिफारिश के अनुसार ही करें**

सिंचाई एवं जल प्रबन्ध:

पानी की उपलब्धता के आधार पर गेहूँ की अच्छी लेने के लिए निम्नलिखित सिंचाइयों की व्यवस्था करनी चाहिए:-

गेहूँ की फसल में जो संभव सिंचाईयाँ दी जा सकें	फल की बढ़ोतरी की विभिन्न अवस्थाएँ जब सिंचाई देनी				
	चंदरी जड़ें	दीर्घा निकलने की अंतिम अवस्था पर	गाँठ बनने की अंतिम अवस्था पर	फूल आने की अंतिम अवस्था पर	दानों में दूध पड़ने पर
एक	✓				
दो	✓			✓	
तीन	✓		✓	✓	
चार	✓	✓	✓	✓	
पाँच	✓	✓	✓	✓	✓

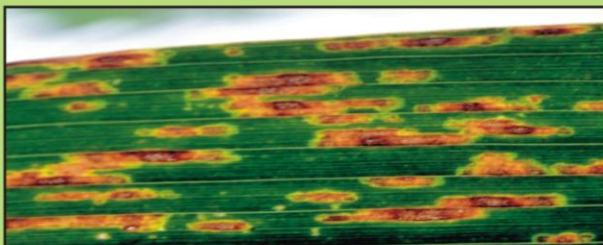
✓ जब सिंचाई देनी हो।

खरपतवारों को रोकथाम:

फसल उगने के एक महीने बाद एक निराई गुड़ाई खरपतवारों के नियंत्रण के साथ-साथ बारानी खेती में नमी संरक्षण में सहायक सिद्ध होती है। रासायनिक रोकथाम के लिए खरपतवारों के उगने के बाद रसायनों को उस समय प्रयोग करें जब उन पर 2-3 पत्तियाँ हो, जो खरपतवारों की अच्छी रोकथाम हो जाती है।

रसायनों या शाकनाशियों के प्रयोग द्वारा गेहूँ की फसल में खरपतवार नियंत्रण		
<b>घास कुलीय खरपतवार</b>	आईसोप्रोट्युरान 75% डब्ल्यू पी (एरील/नॉन-एरील/हैमिफोलीन) 1.7 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर या मैटाक्मुरान (डोसनेक्स 80%) 1.6 कि.ग्रा./हेक्टेयर या क्लोडीनाफाफ प्रोपाजिल (टोपिक 10%) 0.6 कि.ग्रा./हेक्टेयर	आईसोप्रोट्युरान या मैटाक्मुरान को खरपतवारों के उगने से पहले प्रयोग कर सकते हैं। खरपतवारों के उगने के बाद इन रसायनों को प्रयोग उस समय करें जब खरपतवारों में 2-3 पत्तियाँ हो। निचले पर्वतीय क्षेत्रों में समय पर यह अवस्था 30-35 दिनों के बाद जबकि मध्यवर्ती क्षेत्रों में यह अवस्था 40-45 दिनों के बाद में आती है।
<b>चौड़ी पत्तियों वाले खरपतवार</b>	2, 4 -डी सोडियम लवण 80 डब्ल्यू पी (फरनोक्सान या बंधुआ पाउडर) 1.0 कि.ग्रा./हेक्टेयर	समय पर को गई बिजाई वाली फसल में 30-35 दिनों के बाद डालें यदि देरी से बिजाई की गई हो तो यह अवस्था निचले पर्वतीय क्षेत्र में 40-45 दिनों तथा मध्यवर्ती क्षेत्रों में 50-55 दिनों में बिजाई के बाद आती है।
<b>मिले-जुले खरपतवार</b>	आईसोप्रोट्युरान 1.25 कि.ग्रा./हे. + 2.4 डी (सोडियम) 0.625 कि.ग्रा./हेक्टेयर	मिश्रण का, समय पर को गई बिजाई वाली फसल में बिजाई के 30-35 दिनों के बाद छिड़काव करें।

उपरोक्त सभी खरपतवारनाशियों को 750 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें। छिड़काव करते समय चौड़े फव्वारे वाली फ्लैट फैन नोजल की ही प्रयोग करें।



## गेहूँ का पीला रतुआ

**लक्षण एवं प्रबन्धन**

जिला ऊना में रबी सीजन में उगाई जाने वाली विभिन्न फसलों में से गेहूँ एक प्रमुख अनाज की फसल है जिसके अन्तर्गत जिला में लगभग 34 हजार है० भूमि में इसकी खेती की जा रही है जोकि कुल कृषि योग्य भूमि क्षेत्र का 80% भाग है। जिला में गेहूँ की औसत पैदावार 22 क्विंटल प्रति हेक्टी है जो कि अन्य प्रदेशों की तुलना में काफी कम है (जैसे के पंजाब, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश) जिसका मुख्य कारण जिले में गेहूँ की उपज बढ़ाने के लिए कृषि क्रियाओं को सुधारने की काफी सम्भावनायें हैं जैसे रोगप्रतिरोधी किस्मों का चयन, बीज एवं मृदा जनित बीमारियों का उपचार करना, सन्तुलित उर्वरकों का प्रयोग, खरपतवार नाशक रसायनों का प्रयोग, फसल में लगने वाले कीट व बीमारियों का उचित समय पर उपचार रोकथाम व सही समय पर बुआई करना इत्यादि। उपरोक्त विषयों से सम्बन्धित सभी प्रकार की तकनीकी जानकारी कृषक प्रशिक्षण शिवरों का आयोजन करके किसानों का उपलब्ध करवाई जा रही है।

गेहूँ की फसल में विभिन्न प्रकार की बीमारियों के कारण पैदावार में काफी कमी आ जाती है। जिला ऊना में गेहूँ में लगने वाला पीला रतुआ प्रमुख रोग है। यदि इसका उचित समय पर उपचार नियन्त्रण नहीं किया जाता है तो उपज में भारी कमी आ जाती है।

**पीला रतुआ रोग के लक्षण, कारण व प्रबन्धन (उपचार)**

इस रोग का प्रकोप दिसम्बर माह के अन्त व जनवरी माह से शुरू हो जाता है। क्योंकि यह रोग अधिक ठण्ड व अधिक नमी वाले मौसम में ज्यादा फैलता है।

**लक्षण :-** रोग के लक्षण पीले रंग की धारियों के रूप में पत्तियों पर दिखाई देते हैं। (जैसे कि चित्रों में दर्शाया गया है) रोग का अधिक प्रकोप होने पर पिसी हुई हल्दी जैसा पीला पाऊंडर पत्तों पर दिखाई देता है तथा यही पाऊंडर जमीन पर गिरा हुआ भी दिखाई देता है। बीमारी वाले खेत में जाने पर यह पाऊंडर कपड़ों पर भी लग जाता है। रोगी पौधों की बालियों में दाने हल्के एवं सिकुड़े होते हैं, जिससे उपज में काफी कमी आ जाती है।

**उपचार एवं प्रबन्धन:-**

1. रोग प्रतिरोधी गेहूँ की किस्मों की समय पर बुआई करें। जिला ऊना के लिए निम्नलिखित रोग प्रतिरोधी किस्में अनुमोदित की गई हैं:-  
एच. पी. डब्ल्यू. 211, 236, 155, 147, डब्ल्यू एच-1105, 1080, 1021 एच. डी. 2967 ए 3043 तथा डी. पी. डब्ल्यू- 621-50, पी.वी. डब्ल्यू- 644, बी.एल. -892।
  2. रोग के लक्षण आते ही प्रॉपीकोनाजोल (टिल्ट) 25 EC का 0.1 : घोल बनाकर छिड़काव करें। (30 मि.ली. दवाई 30 लीटर पानी में घोलकर एक कनाल में छिड़काव करें)
- रोग के प्रकोप को देखते हुए दूसरा छिड़काव उपरोक्त दवाइयों में से किसी एक दवाई का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।
  - दवाई का घोल बनाने हेतु पानी वा दवाई का उचित मात्रा में प्रयोग करें।
  - दवाई छिड़काव दोपहर बाद धूप में ही करें।
  - वर्षा होने की स्थिति में दोबारा छिड़काव करें।

अधिक जानकारी के लिए अपने निकटतम

कृषि प्रसार अधिकारी/कृषि विकास अधिकारी/कृषि विशेषज्ञ से

या मुफ्त फोन सेवा 1800 - 180 - 1551 या 1551

पर किसान कॉल सेंटर से सम्पर्क करें।



## मक्की व गेहूँ की वैज्ञानिक ढंग से खेती



**कृषि प्रौद्योगिकी प्रबन्ध अभिकरण**  
आतमा ऊना ( हि०प्र० )

कार्यालय दूरभाष : 01975-223211

फैक्स : 01975-223211



## उन्नत मक्की उत्पादन

मक्की हिमाचल प्रदेश के अर्न्तगत पर्वतीय व मैदानी क्षेत्रों की एक प्रमुख खरीफ फसल है। मक्की को खेती हिमाचल प्रदेश में लगभग 2,98,500 हैक्टेयर क्षेत्र में की जाती है। प्रदेश में इससे 7,30,000 टन अन्न उत्पादन होता है। प्रदेश में मक्की को औसतन पैदावार 25 क्विंटल प्रति हैक्टेयर के करीब है जोकि राष्ट्रीय स्तर 17.2 क्विंटल प्रति हैक्टेयर से काफी अधिक है। जिला ऊना में लगभग 32245 हैक्टेयर क्षेत्र में मक्की की खेती की जाती है जिसमें 73259 मि. टन उत्पादन होता है। ऊना में मक्की को औसतन पैदावार 22.72 क्विंटल प्रति हैक्टेयर के करीब है। मक्की की खेती मुख्यतः असिचित अवस्था में अन्न भुट्टे व पॉपकॉर्न के लिए की जाती है। इसके अतिरिक्त मक्की को बेबीकॉर्न हेतु भी प्रदेश में असीम सम्भावनायें हैं।

अधिकतर मक्की की स्थानीय प्रजातियाँ ही प्रचलन में हैं। जिनमें उत्पादकता कम होने के साथ–साथ रोग एवं कीट व्याधि का प्रकोप भी अधिक होता है। मक्की की खेती निम्न दिए गए वैज्ञानिक ढंग से करके उपज 30–35 कि. प्रति हैक्टेयर तक बढ़ाई जा सकती है।

**तालिका 1 हिमाचल प्रदेश के लिए अनुमोदित प्रजातियों की प्रमुख विशेषताएं**

प्रकार	प्रजाति	पकने की अवधि	उपज कि. प्रति हैक्टेयर	विशेषताएं
संकुल	अर्लीकम्पोज़्ट	105-110	33	750-1450 मी. ऊँचाई वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त किस्म
				झुलसा रोग की प्रतिरोधी
	गिरिजा ( 1-118)	110	40	निचले मध्यवर्ती एवं अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त
				झुलसा रोग का प्रकोप कम होता है।
संकर	कंचन-2001	105-110	55-60	मध्यम व निचले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त
	कंचन-25	95-110		मध्यम व ऊँचाई वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त। यह किस्म मीठी व हरे भुट्टे के प्रयोग में लाई जाती है।
	पी.एस.पी.एल-4642	105-110	60-65	यह किस्म 1200 मी. व इसके अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त। झुलसा रोग व बैडिड लीफ व शीथ ब्लाईट की प्रतिरोधी किस्म
	पी.एम.जेड- 4	100-105	70-75	यह किस्म निचले व मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त। झुलसा रोग व बैडिड लीफ की प्रतिरोधी किस्म।
	हार्डब्रिड-177	105-110	60-65	निचले व मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त। झुलसा रोग व बैडिड लीफ व शीथ ब्लाईट की प्रतिरोधी किस्म।
	सी - 1816	100-105	65-70	निचले व मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त। झुलसा रोग व ब्रैडिड लीफ व शीथ ब्लाईट की प्रतिरोधी किस्म।
	आई.ए.-8101	105-110	65-70	निचले व मध्यम ऊँचाई वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त। झुलसा रोग व बैडिड लीफ व शीथ ब्लाईट की प्रतिरोधी किस्म।

##### बीज की मात्रा

सामान्य मक्की 20 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर, 8 कि.ग्रा. प्रति एकड़, 1.6 कि.ग्रा. प्रति बीघा 800 ग्रा. प्रति कनाल पॉपकॉर्न 12-14 कि.ग्रा. हैक्टेयर 560 ग्रा. (खील मक्की) प्रति कनाल बेबीकॉर्न 40-45 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर

##### बीजाई का समय

ऊँचे पहाड़ी क्षेत्र-मई 15 से जून का प्रथम सप्ताह मध्यवर्ती क्षेत्र - मई 20 से जून 15

निचले क्षेत्र - जून 15 से जून 30

##### बिजाई की विधि

प्रदेश में किसान प्रायः मक्की की फसल को छट्टा विधि के साथ बीजते हैं, जोकि सही तरीका नहीं है। क्योंकि इससे पौधों में सामानान्तर दूरी, रोशनी, कार्बनडाइक्साइड तत्वों एवं नमी की प्राप्ति नहीं हो पाती। अतः अधिक उपज लेने के लिए पहले किसान को दो तीन जुताई करके खेत अच्छी तरह तैयार कर लेना चाहिए। आगे बीज को हल के पीछे 3-5 सै.मी. गहरी कतारों में बोना चाहिए।

किस्म	दूरी सै.मी ( कतार से कतार)	दूरी सै.मी बीज से बीज	बीज मात्रा
सामान्य मक्की एवं पॉपकॉर्न	60	20	20 कि.ग्रा./हैक्टेयर
बेबीकॉर्न	60	15	25 कि.ग्रा./हैक्टेयर

##### उर्वरकों की मात्रा एवं प्रयोग विधि

उर्वरकों का प्रयोग मिट्टी परिक्षण के आधार पर करना चाहिए। जैविक खादों का उचित मात्रा ( गली सड़ी देसी खाद 10 टन प्रति है. ) में प्रयोग, बिजाई से लगभग 10-15 दिन पूर्व करने से मक्की के लिए लाभकारी होती है। मिश्रण खाद की पूरी मात्रा एवं यूरिया। केन की एक तिहाई मात्रा बिजाई के समय, शेष बची नाईट्रोजन को दो भागों में ( एक घुटनों की ऊंचाई पर 40-45 दिनों तक व दूसरी मात्रा फूल निकलने पर डालें।

( तालिका 2 )

##### तालिका 2 - खाद एवं उर्वरक

पोषाहार एन.पी.के.	क्षेत्रफल	उर्वरक मात्रा ( कि.ग्रा. )				
		यूरिया	सुपर फास्फेट	म्यूरेट आफ पोटाश	इफको	यूरिया केन
संकर एवं संकुल किस्में						
अ अधिक वर्षा क्षेत्र	है.	260	375	65	190	190/350
120 : 60 : 40	कनाल	10	15	3	8	8/14
ब कम वर्षा क्षेत्र	है.	195	280	50	140	140/250
90 : 45 : 30	कनाल	8	11	2	6	6/10
देसी किस्में						
अ अधिक वर्षा क्षेत्र	है.	175	250	50	125	125/225
80 : 40 : 30	कनाल	7	10	2	5	5/9
ब कम वर्षा क्षेत्र	है.	130	185	33	80	80/140
60 : 30 : 20	कनाल	5	8	2	3	3/5

##### निराई-गुड़ाई एवं खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार नष्ट करने हेतु मक्की की फसल में कम से कम दो बार निराई-गुड़ाई करना आवश्यक है। प्रथम निराई-गुड़ाई बिजाई के 15-20 दिन पर तथा दूसरी बिजाई के 30-35 दिन पश्चात् करें। खेती में जल निकास का उत्तम प्रबंध होना चाहिए।

पहले 20-30 दिन में खरपतवार नियंत्रण अति आवश्यक है। इसके लिए बीजाई के 48 घंटे के अन्दर एटराटफ या मैसाटफ 50 डब्ल्यू. पी., 50-60 ग्रा. 30-32 लीटर पानी में प्रति कनाल छिड़के या फिर यह दवाई 6 कि.ग्रा. रेत में मिलाकर मिट्टी में पर्याप्त नमी होने पर छिड़के।

##### रोग निवंत्रण

हिमाचल प्रदेश में मक्की को लगने वाली प्रमुख बीमारियाँ व रोकथाम निम्न प्रकार हैं।

1.    **तना सड़न****:** यह रोग एक जीवाणु द्वारा पनपता है। रोग से प्रभावित पौधों में शराब जैसी दुर्गन्ध आती है।

**नियंत्रण** - नवजन खाद का अधिक प्रयोग ना करें।

-    खेती में पानी के निकास का उचित प्रबन्ध करें व 650ग्रा. ब्लीचिंग पाउडर प्रति कनाल में प्रयोग करें।

-    रोग रोधी किस्में लगाएं।

2.    **पत्तों का झुलसा रोग व लीफ ब्लाईट****:** यह रोग 30-40 दिन के पौधों को निचली पत्तियों को प्रभावित करता है। झुलसा रोग मुख्यतः दो प्रकार का होता है।

(1) **टरसीकम पत्ता झुलसा****:** इस रोग के धब्बे लम्बूतरे, भूरे या स्याह रंग के व 15 सै.मी. तक की लम्बाई के होते हैं।

(2) **मोडिस पत्ता झुलसा****:** इस रोग के धब्बे 1-2 सै.मी. लम्बे व किशती के आकार के होते हैं इस रोग से पत्तियां सूख जाती हैं व पौधे मर जाते है।

(3) **लीफ व शीथ बैडिड ब्लाईट****:** यह रोग फूल आने से पहले 40-50 दिन की फसल पर 1-2 सै.मी. चौड़ाई वाले भूरे रंग के घेरों के रूप में प्रकट होता है दूर से दिखने पर रोग के लक्षण सांप की उतारी हुई चमड़ी के रूप में प्रतीत होते हैं। यह रोग पौधे के सभी भागों पर छा जाता है।

**नियंत्रण****:-** रोग रोधी किस्में उगाए। रोग ग्रसित पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें, इन्डोफिल EC-452 ग्रा. प्रति ली. के हिसाब से छिड़कें।

**कीट नियंत्रण****:** पर्वतीय क्षेत्रों में प्रायः कीटों का प्रकोप होता है। फिर भी तना छेदक व बालों वाली सुडियां व टिट्ठे कुछ हद तक फसल को हानि पहुंचाते हैं।

1.    **तना छेदक****:** यह कीट तने के अन्दर चला जाता है व तने को खोखला कर देता है तथा पौधे सूख जाते हैं। पत्तियों में प्रायः बड़े-बड़े छिद्र नजर आते हैं जो कि तना छेदक की निशानी होती है।

**नियंत्रण****:-** खेत में साफ सफाई रखें, ग्रसित पौधे उखाड़ देंवें, बीजाई से पहले 2 ग्रा. फोरेट प्रति मीटर कतार में प्रयोग करें।

##### फसल कटाई, गहराई एवं भण्डारण

मक्की के दानों में जब नमी 30 प्रतिशत से कम हो जाए तो भुट्टों को तोड़ें। दानें निकालकर 10-12 प्रतिशत नमी तक सुखाएं व भण्डारण करें।

## उन्नत गेहूँ उत्पादन

गेहूँ जिला ऊना की एक मुख्य अन्न की फसल है। इसकी खेती मुख्यतः रबी मौसम में की जाती है। जिले में वर्ष 2013-14 में इसकी खेती 34923 हैक्टेयर क्षेत्र में की गई जिससे 69710 टन कुल उत्पादन हुआ तथा औसत उपज 19.96 क्विंटल प्रति हैक्टेयर रही जो कि राष्ट्रीय औसत (3.3 क्विंटल प्रति हैक्टेयर) से काफी कम है।

##### अनुमोदित किस्में:

जिले में विभिन्न क्षेत्रों के लिए गेहूँ की अनुमोदित किस्में इस प्रकार हैं:

**निचले क्षेत्र (240-1000 मी) :**

एच पी डब्ल्यू 349, एच पी डब्ल्यू 236, एच पी डब्ल्यू 211, एच पी डब्ल्यू 155, एच पी डब्ल्यू 147, डब्ल्यू एच 1105, डब्ल्यू एच 1080, डब्ल्यू एच 1021, एच डी 3043, एच डी 2967, डी पी डब्ल्यू 621-50, पी बी डब्ल्यू 644, वी एल 892

**मध्यवर्ती क्षेत्र (1001-1500 मी) :**

एच पी डब्ल्यू 349, एच पी डब्ल्यू 249, एच पी डब्ल्यू 236, एच पी डब्ल्यू 155, एच पी डब्ल्यू 147, एच पी डब्ल्यू 89, वी एल 907, वी एल 829, वी एल 616, एच एस 507

**ऊँचे पर्वतीय क्षेत्र (1501-2500 मी) :**

एच पी डब्ल्यू 236, एच पी डब्ल्यू 155, एच पी डब्ल्यू 42

**बहुत ऊँचे/बर्फानी क्षेत्र (2501-3250 मी) :**

एच पी डब्ल्यू 42, वी एल 892, एच एस 375 ( हिमगिरि)

##### भूमि:

गेहूँ विभिन्न प्रकार की भूमियों में उगाया जाता है। अच्छे जल निकास वाली मध्यम दोमट भूमि इसकी खेती के लिए उपयुक्त है।

##### भूमि की तैयारी :

एक गहरा हल चलाने के बाद देसी हल से 1-2 जुताईयां करें ताकि खेत अच्छी तरह से तैयार हो जाए। यदि धान के बाद गेहूँ की खेती करनी हो तो एक अतिरिक्त जुताई करनी चाहिए। मिट्टी के ढेलों को अच्छी तरह से तोड़ देना चाहिए।

##### बिजाई का समय :

अच्छी पैदावार लेने के लिए गेहूँ की बिजाई सही समय पर करनी चाहिए। प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में बिजाई का समय निम्नलिखित है :-

क्षेत्र	सिंचित	असिंचित
<b>( अ ) समय से बिजाई<span> </span>:</b>	अक्तूबर के अंतिम सप्ताह -15 नवम्बर	अक्तूबर के अंतिम सप्ताह -15 नवम्बर
1. निचले पर्वतीय क्षेत्र	अक्तूबर के अंतिम सप्ताह - 15 नवम्बर	अक्तूबर के अंतिम सप्ताह - 15 नवम्बर
2. मध्यवर्ती पर्वतीय क्षेत्र	1 अक्तूबर से 15 अक्तूबर	1 अक्तूबर से 15 अक्तूबर
3. ऊँचे पर्वतीय क्षेत्र		
<b>( ब ) पछेती बिजाई<span> </span>:</b>	दिसम्बर के अन्त तक	वर्षा पर निर्धारित परंतु
1. निचले पर्वतीय क्षेत्र	दिसम्बर के अन्त तक	दिसंबर के अंत तक
2. मध्यवर्ती पर्वतीय क्षेत्र	15 अक्तूबर तक	वर्षा पर निर्धारित परंतु
3. ऊँचे पर्वतीय क्षेत्र		दिसंबर के अंत तक 15 अक्तूबर तक

यदि देरी से बिजाई की जाये तो उत्पादन में कमी आ जाती है।

##### बिजाई का ढंग :

गेहूँ को 22 सेंटीमीटर दूरी की कतारों में बोना चाहिए। बीज को 5 सेंटीमीटर से अधिक गहरा नहीं डालना चाहिए।

##### बीज की मात्रा :

सही समय की बिजाई के लिए 90-100 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टेयर पर्याप्त है लेकिन बारानी क्षेत्रों में 20 दिसंबर के बाद बिजाई के लिए 150 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टेयर उपयुक्त होता है।

##### खाद व उर्वरक :

गेहूँ की अच्छी उपज लेने हेतु गोबर की खाद का 100-125 क्विंटल प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करें। इसके अतिरिक्त निम्नलिखित उर्वरकों का प्रयोग किसान भाई करें।

क्षेत्र	तत्व ( कि.ग्रा./है. )			उर्वरक ( कि.ग्रा./है. )	
	नाईट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश	यूरिया	एसएसपी
<b>सिंचित</b>	120	60	30	260	375
<b>असिंचित</b>	80	40	40	175	250
					65